UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 6.875 **ISSN : 2393-8358**

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 11, No. 7 **July, 2024**

PEER REVIEWED JOURNAL

EDITOR

Dr. H.L. Sharma
Associate Professor
Shimla, Himachal Pradesh

Dr. Hans Prabhakar Ravidas
Assistant Professor
Department of Performing Arts,
National Sanskrit University, Tirupati

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by

VPO Nandpur, Tehsil-Jubbal, District-Shimla, Himachal Pradesh

email : ijcrournal971@gmail.com, Website : ijcrjournals.com

PEER REVIEWING EDITORIAL BOARD

- Dr. Susmita Nandi - Assistant Professor, Dept. of Indian Painting, Sanchi University of Buddhist-Indic Studies, Sanchi, Raisen, M.P.
- Dr. Gagandeep - Asst. Prof. of French (Guest Faculty), Panjab University, Chandigarh
- Harpreet Kaur Bains - Assistant Professor of Foreign Languages, PAU, Ludhiana
- Dr. Aruna Kumari - Assistant Professor, Department of Sociology, F.S.S., Baranas Hindu University, Varanasi
- Dr. Abhigyan Dwivedi - Assistant Professor, Department of Linguistics, Dr. Harisingh Gour Central University, Sagar (M.P.)
- Kusum Kumari – Assistant Professor, Home Science, Dr. Ram Manohar Lohiya Govt. Degree College, Muftiganj, Jaunpur (U.P.)
- Dr. Priyankar Agrawal - Guest Lecturer, Dept. of Dharmashastra-Mimansa, Faculty of S.V.D.V., BHU, Varanasi
- Dr. B.L. Gundur - Principal, Bangurnagar Arts, Science and Commerce College, Dandeli, Uttar Kannada, District Karnataka
- Dr. Vinod Kumar Vishwkarma - Assistant Professor, Department of Commerce, School of Commerce & Management, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya (A Central University), Bilaspur, (C.G.)
- Dr. Vibha Shankar - Assistant Professor, Dept. of Hindi, G.L.A. College, Doltonganj, Palamu, Jharkhand
- Dr. Nisha - Assistant Professor, Department of Sociology, Mahatma Gandhi Balika Vidyalaya (P.G.) College, Firozabad
- Dr. Pankaj Kumar 'Niraj' - Assistant Professor, Department of English, Dr. Jagannath Mishra Mahavdyalaya, Muzaffarpur, Bihar
- Dr. Parada Wongsombut - Program in Vocational Education, Faculty of Education, Kasetsart University, Thailand
- Dr. Som Prasad Khatiwada - Associate Professor, Tribhuvan University, Nepal
- Dr. Dinesh Bansilal Patil - Department of Panchakarma, Pune
- Dr. Sarita Rani - Assistant Professor, Department of English, TMU Mooradabad
- Dr. G.V. Satya Sekhar - Asst. Professor, Department of Finance, Visakhapatnam

ADVISORY BOARD

- Prof. Pranam Dhar - Department of Commerce & Management, West Bengal
- Prof. Manisha Panwala - Department of Business & Industrial Management, Veer Narmad South Gujarat University, Surat
- Prof. Y.V.S. Subrahmanya Sarma - D.N.R. College, Bhimavaram

MANAGING DIRECTOR

Mushtaque Ahmad

© Publisher

ISSN 2393-8358
9 772393 835002

Disclaimer : The Peer Reviewing Editorial Board does not necessarily subscribe to opinions and facts expressed in the articles for which the responsibility solely rests with the individual authors.

विषय सूची

▸	राही मासूम रज़ा के साहित्य में चित्रित धार्मिक रूढ़ि और आडम्बर **डॉ0 कृष्णा पंडित**	1-4
▸	Lower House of the Parliament of India: The Pastiche Masterpiece View **Dr. Jyoti Rani**	5-11
▸	Political Stability and Administrative Efficiency of Urban Local Self-Government: An Analytical Study of Telangana, India **Dr. Shafiq Ahmed & Ms. Swetha Rachel Deshbandhu**	12-18
▸	Integration of Technology in Traditional Hindi Classrooms: A Case Study Approach **Dr. R. Lakshmi**	19-24
▸	सैदपुर नगर तथा पाश्वर्ती क्षेत्र में पर्यटन की सम्भावनायें : एक अध्ययन **डॉ0 विजय श्रीवास्तव एवं प्रोफेसर डॉ0 जी0एस0 लाल**	25-27
▸	रामायण काल स्त्रियों का चरित्र **डॉ0 संजय कुमार**	28-30
▸	संस्कृत महाकाव्यों में माघ का गजशास्त्रीय ज्ञान **डॉ0 कुमारी प्रियंका शर्मा**	31-34
▸	Enhancing Reading Skills in Primary School Students through Augmented Reality Technology **Rosewin C Peter**	35-40
▸	Robert Challe, Un Personnage Exceptionnel De La Littérature Universelle **Harpreet Kaur Bains**	41-42
▸	समकालीन कला में डॉ0 जगमोहन माथोड़िया की कला का योगदान **कृष्ण कुमार**	43-46
▸	The Analysis of Consumer Perceptions of Packaged Drinking Water in Surguja District, Chhattisgarh, With a Focus on Emerging Issues and Challenges **Mr. Shobhnath Rajwade & Dr. Anand Kumar**	47-60
▸	चालुक्य साम्राज्य की स्थापत्य कला का उत्थान और विकास **डॉ0 दीक्षिता अजवानी**	61-67
▸	A Perspective on Employee Motivation **Dr. Kamini Singh**	68-70
▸	The Significance of the Role of Dance, Drumming and Music Education in Enhancing the Physical, Mental and Social Well-being of School Children in Sri Lanka **W.K.D.S Wijenayaka & Dr. W.M.H.G.U.I.T.B. Weerakoon**	71-74
▸	Sustaining Tradition: The Guru Kula System and the Preservation of Kandyan Dance in Sri Lanka **H. Tharanga Sampath Disanayaka**	75-79

▸	The Dilemma of Globalization: Inequality between the Global South and North **Kshitij Singh**	80-84
▸	A Study on Various Digital Marketing Tools and Change in Consumer Buying Process **Gopal Chaurasia**	85-88
▸	Decoding Financial Statement Fraud: A Comprehensive Review of Theories and Practices **Pranab Rath & Dr. Mohammed Khursid**	89-96
▸	पत्रकारिता में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग : अवसर, नैतिक दायित्व **मनीष कुमार गुप्ता एवं रंजीत कुमार राय**	97-102
▸	बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति एवं साहित्य **डॉ0 आभा गुप्ता**	103-105
▸	कबीर युग की उपज **डॉ0 सुनीता यादव**	106-108
▸	भारतीय ज्ञान परम्परा में सूचना प्रौद्योगिकी **संगीता**	109-110
▸	असंगघोष की कविताओं में दलित चेतना **रमेश कुमार राही**	111-114
▸	क्षेत्रीय एवं स्थानीय इतिहास लेखन के परिप्रेक्ष्य में मुजफ्फरपुर का अध्ययन **डॉ० संगीता कुमारी साह**	115-118
▸	First World War: Causes, Allies and Consequences **Dr. Bhavesh Dwivedi**	119-126
▸	अल्मा कबूतरी उपन्यास में चित्रित : आदिवासी जीवन **पूजा मिश्रा**	127-128
▸	Exploring Workplace Wellness: The Intersection of Mental Health, Physical Well-Being, and Career Development for Women **Dr. Seema Singh**	129-134
▸	ग्रामीण चिकित्सा पर डिजिटल क्रान्ति का प्रभाव **बविता यादव एवं डॉ0 अनीता देवी**	135-136
▸	हरिवंशराय बच्चन की सौंदर्य दृष्टि : एक विश्लेषण **डॉ0 सुनीता सिंह**	137-140
▸	भारतीय समाज के विकास में स्त्रियों की भूमिका का ऐतिहासिक परिदृश्य **डॉ0 जितेन्द्र यादव**	141-144
▸	दलित साहित्य की अवधारणा **डॉ0 योगेश चन्द्र यादव एवं भास्करन**	145-147
▸	लोककला में प्रयुक्त स्वास्तिक प्रतीक चिह्नन एवं उसका महत्व **अदिति चौहान एवं प्रोफेसर (डॉ0) पूजा गुप्ता**	148-150

▸	अपना दल (सोनेलाल) की नीतियाँ, कार्यक्रम एवं राजनीतिक सफ़र : एक समालोचनात्मक अध्ययन **रानी गुप्ता एवं डॉ. सांत्वना पांडे**	151-155
▸	स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की वैज्ञानिक अभिक्षमता तथा उनकी गणित विषय में शैक्षिक निष्पादन से संबंध का अध्ययन **सतीश कुमार गुप्ता एवं डॉ० विभा सिंह**	156-160

अपना दल (सोनेलाल) की नीतियाँ, कार्यक्रम एवं राजनीतिक सफ़र : एक समालोचनात्मक अध्ययन

रानी गुप्ता
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़
डॉ. सांत्वना पांडे
सहायक प्राध्यापक, राजनीतिक विज्ञान विभाग, गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

सारांश

अपना दल (सोनेलाल) उत्तर प्रदेश का एक क्षेत्रीय राजनीतिक दल हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तर–प्रदेश के क्षेत्रीय राजनीतिक दल के रूप में अपना दल (सोनेलाल) के नीतियों, कार्यक्रमों एवं अपना दल के राजनीतिक सफ़र का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। अपना दल के राजनीतिक सफ़र का अध्ययन दो भागो में किआ गया है प्रथम, डॉ. सोनेलाल पटेल के नेतृत्व में अपना दल सोनेलाल का राजनीतिक सफ़र तथा दूसरा, अनुप्रिया पटेल के नेतृत्व में अपना दल का राजनीतिक सफ़र। उत्तर प्रदेश के 2022 की विधानसभा चुनाव में अपना दल (एस) एक पंजीकृत राजनीतिक दल से निर्वाचन आयोग द्वारा राज्य स्तरीय दल की मान्यता प्राप्त कर ली है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य अपना दल (सोनेलाल) के राजनीतिक सफर और उसकी नीतियाँ एवं कार्यक्रम का सामाजिक न्याय के संदर्भ में अध्ययन करना है।

मुख्य शब्द : राजनीतिक प्रतिनिधित्व, लोकतंत्र, क्षेत्रीय राजनीतिक दल, अपना दल (सोनेलाल)।

परिचय

भारत एक संघीय देश है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद–1 में भारत को राज्यों का संघ कहा गया है। उत्तर प्रदेश देश 28 राज्यों में सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य है। यह भारत के उत्तरी भाग में स्थित है। उत्तर प्रदेश भारतीय राजनीति की धुरी है। भारत में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का अपना इतिहास रहा है। क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का अस्तित्व प्रत्येक लोकतांत्रिक देश में है चाहे वह किसी भी रूप में हो। स्वतंत्रता उपरांत ही भारत में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का निर्माण प्रारम्भ हो गया। क्षेत्रीय राजनीतिक दल भारतीय राजनीतिक प्रणाली की एक विशेष पहचान है। भारत के राज्यों में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के उद्भव का मुख्य कारण राजनीतिक असहमति रही है। राजनीतिक असहमति राजनीतिक केंद्र में होने वाले बिखराव की अभिव्यक्ति थी ना की सामाजिक एवं आर्थिक परिधि में सक्रिय हितों की अभिव्यक्ति। भारतीय राजनीति में अधिकांश क्षेत्रीय राजनीतिक दल क्षेत्रीय अस्मिता, राज्यों की स्वायत्तता की मांग, राजनीतिक आकांक्षाओं, राष्ट्रीय दलों में परस्पर फूट तथा प्रतिस्पर्धा के कारण ही निर्मित हुए है। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में देखा जाए तो क्षेत्रीय राजनीतिक दल गठबंधन की राजनीति की ही देन है। 1967 के बाद उत्तर प्रदेश की राजनीति में एक नया मोड़ आया जिसमें छोटे–छोटे क्षेत्रीय दलों ने भी राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर की राजनीति को प्रभावित करना शुरू कर दिया। उत्तर प्रदेश की राजनीति में 1967 आम चुनाव के बाद जिस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दल बिखराव व पतन की ओर बढ़ने लगा उससे क्षेत्रीय राजनीतिक दल और भी सुदृढ़ होते गए।

नब्बे के दशक में उत्तर प्रदेश की राजनीति में भारी बदलाव देखे गए और क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का उदय उनमें से एक है। राजनीतिक सहमति के अभाव के कारण राज्य के सतत विकास को लेकर राज्य को काफी नुकसान उठाना पड़ा। हाल के दिनों में उत्तर प्रदेश की राजनीति की छवि ऐसे लोगों की व्यापक घुसपैठ से खराब हुई है, जिन पर कथित तौर पर संदिग्ध प्रतिष्ठा रखने या हिंसा भड़काने की आशंका है। 2007 के विधानसभा चुनावों के बाद राजनीति परिदृश्य को बदलने के लिए नए रुझान सामने आए हैं। (Dwivedi, 2011) 1989 में दूसरे लोकतांत्रिक उभार ने ओबीसी का मौजूदा राजनीतिक दलों कांग्रेस और भाजपा से मोहभंग कर दिया था और वे तीसरे स्थान की तलाश में थे। वह जनता दल (जेडी) द्वारा प्रदान किया गया था। 1989 में मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व में जनता दल ने अपनी सरकार बनाई। भाजपा ने एक ओर दलितों के साथ गठबंधन बनाने और दूसरी ओर राजनीतिक दल पदों और सरकार में ओबीसी को शामिल करने की रणनीति उत्तर प्रदेश में जनता दल का मुकाबला करने के लिए अपनाई। जबकि उन्होंने

1995 में बसपा के साथ गठबंधन बनाने की कोशिश की। उन्होंने राजनीतिक दलों के पदों या राजनीतिक दलों में दलितों को अधिक प्रतिनिधित्व दिया। (Verma, 2005)

उत्तर प्रदेश में जातियों को परासरण की प्रक्रिया द्वारा एकरूप बना दिया गया है, जहां जो जातियां वैचारिक कारणों से राजनीतिक रूप से कई राजनीतिक दल में बिखरी हुई थीं, वे उन राजनीतिक दल की ओर आकर्षित हुईं जो पूरी तरह से जाति के आधार पर उनका समर्थन करती थीं। मुलायम की तुलना में मायावती अधिक चतुर राजनीतिज्ञ साबित हुईं और उन्होंने राज्य के सभी हिस्सों में कई "ब्राह्मण जोड़ो सम्मेलन" आयोजित किए और "भाईचारा" का गठन भी किया। पूर्वी उत्तर प्रदेश में कुछ छोटे, एक ही जाति के क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का उद्भव इस बात का संकेत है कि बड़े दल कुछ सामाजिक हित समूहों का प्रभावी ढंग से प्रतिनिधित्व करने या उनके साथ जुड़ने में असफल रहे हैं, जो अब इन बड़े दलों के वोट बैंक बनने के लिए तैयार नहीं हैं। प्रतिस्पर्धी लामबंदी की इसी पृष्ठभूमि में उनकी उपस्थिति कुछ सामाजिक हित समूहों का प्रभावी ढंग से प्रतिनिधित्व करने या उनके साथ जुड़ने में बड़ी राजनीतिक दलों के नेतृत्व की विफलता का संकेत है। (G., 1999) इसका मतलब यह भी है कि उन सामाजिक गठबंधनों में कमी आ रही है जबकि सोनेलाल पटेल के नेतृत्व वाला अपना दल कुर्मियों के ओबीसी समुदाय की पार्टी है। एकल जाति राजनीतिक दल अपना दल अपने समर्थकों को आत्म–पुष्टि का एक माध्यम प्रदान करती हैं, अपना दल, डॉ. सोनेलाल पटेल द्वारा सामाजिक न्याय के उद्देश्य को लेकर 1995 में गठित किया गया। डॉ. पटेल अपने राजनीतिक जीवन का सफर बसपा के सदस्य के रूप में करते है। सामाजिक न्याय को स्थापित करने हेतु सोनेलाल समाज के सभी वर्गों, शोषित, वंचित व पिछड़ों के उत्थान के लिए कार्य करते है, समाज के सभी वर्गों में राजनीतिक प्रतिनिधित्व की बात करते है। वे समाज में व्याप्त बुराइयों एवं कर्मकांडी व्यवस्थाओं को समाप्त करने पर बहुत जोर देते थे।)Trivedi, (2018 अपना दल (सोनेलाल) उत्तर प्रदेश में एक क्षेत्रीय राजनीतिक दल है। इसकी स्थापना 2016 में अनुप्रिया पटेल ने की थी। यह दल समाज के निचले स्तर पर पड़े दबे, कुचले, शोषित, वंचितों का प्रतिनिधित्व करने वाली पार्टी है। अपना दल (एस.) की गठन का मुख्य उद्देश्य वंचित, शोषित और पिछड़ा वर्ग का हर क्षेत्र में सर्वांगीण उत्थान और विकास करना और उनके जीवन के प्रत्येक क्षेत्रों में उनकी जनसंख्या के अनुरूप प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना है। लोकतंत्र के इस सभी स्तंभों में आनुपातिक प्रतिनिधित्व के अभाव में शोषित, वंचित, दबें–कुचले वर्गों का विकास संभव नहीं है और जब तक इन सभी वर्गों की सभी क्षेत्रों में आनुपातिक भागीदारी सुनिश्चित नहीं होगी तब तक राष्ट्र और राष्ट्र का लोकतंत्र सही मायने में मजबूत हो ही नहीं सकता। भारतीय समाज में जन्म आधारित पहचान के आधार पर पूर्वाग्रह और शोषण निरंतर जारी है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता की सामाजिक रूप से गैर बराबरी और उच्च–नीच के जीवंत अनुभव आज भी मायने रखते हैं। पहचान की राजनीतिक लंबे अरसे से समाज में व्याप्त अधिपत्यवादी व्यवस्थाओं को चुनौती देती है। उत्पीड़ित वर्ग को एकजुट होकर सामाजिक न्याय के उद्देश्य को पूरा करने की प्रेरणा देती है। पहचान की राजनीतिक बुनियादी मुद्दों और सामाजिक सुधारो पर ध्यान केंद्रित करती है। विकास तो किसी भी सरकार का नैतिक दायित्व है। सड़क, बिजली, पानी, रेल, इंटरनेट, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं कल्याणकारी कार्य सरकार की जिम्मेदारी है। इन जन सुविधाओं को सुनिश्चित करने के साथ–साथ हाशिये पर पड़े हुए तबको के सम्मान और सामाजिक बराबरी को सुनिश्चित करना लोकतंत्र का सही अर्थ होता है। सामाजिक–आर्थिक लोकतंत्र के बिना राजनीतिक लोकतंत्र सदैव अधूरा है। अपना दल एक सामाजिक न्याय के व्यापक अवधारणा को धरातल पर उतरना चाहती है। सामाजिक न्याय का अर्थ समाज के सभी वर्गों में समान अवसर, विषमताओं का उन्मूलन, अधिकार और सुरक्षा, आर्थिक समानता तथा समावेशिता लाना है। अपना दल (सोनेलाल) एक राज्य स्तरीय राजनीतिक दल है।(ECI) अपना दल उत्तर प्रदेश के प्रमुख राजनीतिक दलों में से एक है। उत्तर प्रदेश विधानसभा में पार्टी के 13 विधायक हैं। विधायकों की संख्या के हिसाब से अपना दल उत्तर प्रदेश का तीसरा सबसे बड़ा राजनीतिक दल है।

डॉ. सोनेलाल पटेल के नेतृत्व में अपना दल का राजनीतिक सफर

अपना दल, जिसका गठन 90 के दशक की शुरुआत में हुआ था, स्थापना के तुरंत पश्चात् ही के आम चुनावों में अपना दल का वोट शेयर लगातार बढ़ा। उदाहरण के लिए, मछलीशहर में उसका वोट शेयर 1996 में 2.46 प्रतिशत से बढ़कर 1998 में 5.53 प्रतिशत हो गया; जौनपुर में, 1996 में 4.67 प्रतिशत से 1998 में 6.17 प्रतिशत तक; वाराणसी में, 1996 में 4.76 प्रतिशत से 1998 में 10.16 प्रतिशत तक; में

रॉबर्ट्सगंज 1996 में 1.77 प्रतिशत से बढ़कर 1998 में 5.83 प्रतिशत हो गया; और फूलपुर में, 1996 में 0.44 प्रतिशत से बढ़कर 1998 में 6.27 प्रतिशत हो गया। समान रूप से महत्वपूर्ण बात यह है कि इन

पांच लोकसभा क्षेत्रों में अपना दल तीन प्रमुख दलों से पीछे था भाजपा, सपा और बसपा, लेकिन कांग्रेस से आगे थी। अपना दल को 1998 में उत्तर प्रदेश राज्य में अन्य 37 लोकसभा क्षेत्रों में वोट मिलेः इनमें से घाटमपुर, बांदा, इलाहाबाद, मिर्ज़ापुर, फैजाबाद और अकबरपुर में वह कांग्रेस से आगे थी। (G., 1999)

डॉ. सोनेलाल पटेल का राजनीतिक सफर बहुत कठिन रहा सोनेलाल अपने जीवन काल में कभी लोकसभा एवं उत्तर प्रदेश के विधानसभा निर्वाचन में कभी जीत प्राप्त न कर सके अपना दल के स्थापना के बाद उत्तर प्रदेश के विधानसभा निर्वाचन (1996) में एक भी प्रत्याशियों की जीत नहीं हुई। उत्तर प्रदेश के 14वें विधानसभा निर्वाचन (2002) में केवल 3 सदस्यों की जीत हुई। गंगापुर विधानसभा से सुरेन्द्र सिंह पटेल, नवाबगंज विधानसभा क्षेत्र से अंसार अहमद तथा इलाहाबाद वेस्ट से अतीक अहमद निर्वाचित हुए। उत्तर प्रदेश के 15वें विधानसभा में अपना दल के एक भी प्रत्याशियों की जीत नही हुई।

उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनावों में अपना दल का प्रदर्शन

वर्ष	चुनाव लड़ी गयी सीट	जीत	कुल मतदान का प्रतिशत	चुनाव लड़ी गयी सीटों पर मतदान प्रतिशत
1996	155	—	0.77	2.09
2002	227	3	2.16	3.78
2007	39	—	1.06	10.49

Source: Election Commission of India

2009 में डॉ. सोनेलाल पटेल का कार दुर्घटना में मृत्यु हो गया पार्टी का कार्यभार उनकी पत्नी कृष्णा पटेल और पुत्री अनुप्रिया पटेल के हाथों आ गया है। कृष्णा पटेल अपना दल की राष्ट्रीय अध्यक्ष हुई। 2012 में उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में रोहनियां विधानसभा क्षेत्र से अनुप्रिया पटेल निर्वाचित हुई 2014 में लोकसभा चुनाव में अनुप्रिया पटेल मिर्जापुर से सांसद हुई। अपना दल 2016 में विघटित हो गया एक दल अनुप्रिया के नेतृत्व में अपना दल (एस) और दूसरा दल कृष्णा पटेल के नेतृत्व में अपना दल (कमेरावादी)। (Gupta, 2023) उत्तर प्रदेश के 18वें विधानसभा चुनाव 2022 में प्रतापगढ़ विधानसभा क्षेत्र से कृष्णा पटेल, पिंडरा विधानसभा क्षेत्र से राजेश कुमार सिंह, रोहनिया विधानसभा क्षेत्र से अभय पटेल, चुनार विधानसभा क्षेत्र से रमाशंकर सिंह पटेल को टिकट दिया। डॉ पल्लवी अपना दल की सदस्य होते हुए भी सपा के चुनाव चिन्ह से सिराथू विधानसभा सीट से चुनाव लड़ी और निर्वाचित भी हुई है।

अपना दल (एस) भारतीय जनता पार्टी की एक सहयोगी दल है अपनी स्थापना से अब तक भारतीय जनता पार्टी के सहयोगी दल के रूप में उत्तर प्रदेश के दो विधानसभा चुनाव तथा लोकसभा के दो निर्वाचन में शामिल हुई है। प्रदेश या देश में फिलहाल अपना दल की सरकार आसीन नहीं है। दोनों जगह बीजेपी की पूर्ण बहुमत की सरकार है। अपना दल (एस) महज एक सहयोगी की भूमिका में है, पूर्ण बहुमत की सरकार अपने रूप में काम करती है। अपना दल पिछड़े, दलित, दबे, कुचले वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाली पार्टी है इसलिए अपना दल के विचारधारा के अनुरूप वंचित वर्गों के हितों से जुड़े हुए विषयों को पार्टी के विधायक, सांसद मजबूती से विधानसभा, लोकसभा, एनडीए के बैठकों में रखते हैं। सरकार के मुखिया तथा भाजपा नेतृत्व का ध्यान आकृष्ट करके उन मसलों को हल करवाते हैं। सहयोगी दलों के नाते जनहित की सरकारी योजनाओं का लाभ प्रदेश—देश के मतदाता तक ले जाने में भी सहयोग करते हैं। अपना दल (एस.) के प्रदेश कार्यालय में आम जनसुनवाई की प्रक्रिया निरंतर संचालित रहती है। जहाँ सामान्य जनता की पूरी क्षमता से मदद होती है।

सहयोगी दल के रूप में अपना दल (एस) संसद के समक्ष निरंतर पिछड़े, दलित, आदिवासी समाज के हितों को प्रभावित करने वाले विषय उठता है। उदहारण— मेडिकल नीट की परीक्षा में ओबीसी आरक्षण लागू करवाने का विषय, ओबीसी मंत्रालय के गठन के विषय, न्यायपालिका में दलित, पिछड़े, आदिवासियों की भागीदारी का विषय, ओबीसी क्रीमीलेयर की सीमा को बढ़ाने का विषय, जातिगत जनगणना कराने का विषय, केंद्र सरकार में नौकरियों का बैकलाग सीट भरने का विषय आदि।

भाजपा लंबे अरसे से उत्तर प्रदेश के सत्ता से बेदखल रही। अपना दल भी संघर्ष के दौर में ही रहा लेकिन जब यह दोनों दल साथ आए तो एक दूसरे के पूरक बने। उत्तर प्रदेश में एक स्थायी और मजबूत सरकार बनी। उत्तर प्रदेश पिछड़ा, दलित बहुल राज्य है। अपना दल इन्हीं दबी, कुचली, कमजोर जातियों का चेहरा है, उनकी आवाज है। अपना दल (एस.) की सत्ता के सहयोगी के रूप में उपस्थित का कमजोर तबको के मनोबल पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है क्योंकि उनके मसले राज्य की राजनीतिक चर्चा के केंद्र

में लाने का काम अपना दल करता है। इस तरह उत्तर प्रदेश की एक बड़ी बहुत बड़ी जनसंख्या के हितों की संरक्षण में अपना दल (एस.) अपना योगदान दे रही है।

अनुप्रिया पटेल के नेतृत्व में अपना दल (एस) का राजनीतिक सफ़र–

उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनावों में अपना दल (सोनेलाल) का प्रदर्शन

वर्ष	चुनाव लड़ी गयी सीट	जीत	कुल मतदान का प्रतिशत	चुनाव लड़ी गयी सीटों पर मतदान प्रतिशत
2012	76	1	0.90	4.86
2017	11	9	0.98	39.21
2022	17	12	1.62	40.76

Source: Election Commission of India

उत्तर प्रदेश के 2012 के विधानसभा चुनाव में अपना दल का प्रत्याशी 1 ही सीट पर जीत प्राप्त करती है। 2017 के विधानसभा चुनाव में अपना दल (एस) 11 में 9 सीटों पर जीत हासिल की। 2022 के विधानसभा चुनाव में अपना दल (एस) 17 में से 12 सीटों पर जीत प्राप्त की।

उत्तर प्रदेश में 17वीं लोकसभा निर्वाचन (2019) के 80 सीटों पर अपना दल (सोनेलाल) की स्थिति

क्र.सं.	राजनीतिक दल	प्राप्त सीट	पार्टी को मिलें वैध मत
1	बी.जे.पी.	62	49.98
2	बी.एस.पी.	10	19.43
3	सपा	5	18.11
4	कांग्रेस	1	6.36
5	अपना दल (सोनेलाल)	2	1.21

Source: Election Commission of India

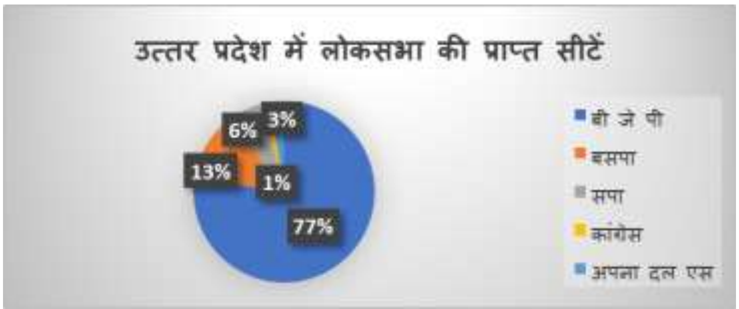

18वीं लोकसभा निर्वाचन (2024) में अपना दल (एस.) को प्राप्त सीट

क्र.सं.	सदस्य के नाम	निर्वाचन क्षेत्र	जिला	परिणाम	मत	मत प्रतिशत
1	अनुप्रिया पटेल	मिर्जापुर (79)	मिर्जापुर	जीत	471631	42.67
2	रिंकी कोल	राबट्र्सगंज(80)	सोनभद्र	हार	336614	33.34

Source: https://results.eci.gov.in/PcResultGenJune2024/partywiseresult-S24.htm

18वीं लोकसभा निर्वाचन में भारतीय जनता के सहयोगी दल के रूप में अपना दल (एस) ने अपने पार्टी के दो प्रत्याशियों को टिकट दिया। मिर्जापुर निर्वाचन क्षेत्र से प्रत्याशी के रूप में स्वयं अनुप्रिया पटेल और राबट्र्सगंज निर्वाचन क्षेत्र से प्रत्याशी के रूप में रिंकी कोल। मिर्जापुर सीट से अनुप्रिया पटेल की लगातार तीसरी बार जीत हुई लेकिन राबट्र्सगंज सीट से रिंकी कोल हार गयी। अनुप्रिया पटेल एनडीए सरकार में लगातार तीसरी बार केंद्रीय राज्यमंत्री है। लोकसभा में अपना दल (सोनेलाल) के प्रभाव में कमी आयी।

एक विचारधारा आधारित पार्टी को अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, अपना दल (एस.) ने भी शुरुआती दौर में ऐसे ही अनेक चुनौतियों का सामना किया है और पार्टी अब भी इन चुनौतियों का सामना कर रही है। उदाहरणतः प्रथम बड़ी पार्टी के समान छोटे दलों को कॉर्पोरेट फंडिंग नहीं मिलती है। संसाधनों के अभाव के कारण पार्टी के सांगठनिक विस्तार की चुनौती निरंतर बनी रहती है। दूसरा इसी प्रकार छोटे दलों को प्रेस मीडिया का पर्याप्त समर्थन नहीं मिलता है, उनकी खबरों को प्रमुख स्थान नहीं मिल पाता। तीसरा संसाधनों को संसाधनों के अभाव के कारण ही छोटे दलों के पास

कुशल रिसर्च टीम भी नहीं होती है इसलिए किसी विषय पर तत्व आधारित जानकारी के अभाव की भी चुनौती रहती है। चौथा व्यापक जन समर्थन के बावजूद धनबल, माफिया–गुंडे शासन सत्ता की ताकत से अक्सर उनके चुनावी परिणाम प्रभावित हो जाते हैं। पांचवा कड़ी मशक्कत से विजय हुए छोटे दलों के सांसद या विधायक आमतौर पर बड़ी पार्टियां दबाव बनाकर तोड़ देती है। छठें छोटे दलों को अनेक बार वोट कटवा कहकर उनकी छवि धूमिल की जाती है। सातवां संवैधानिक संसाधनों में छोटे दलों से जुड़े समुदाय की नगण्यता भी उनकी सफलता में एक अहम् बाधक है।

निष्कर्ष

अपना दल (सोनेलाल) वंचित समुदाय का सर्वांगीण विकास के पक्षधर हैं इस दल का मानना हैं कि सामाजिक न्याय की अवधारणा जीवन के हर क्षेत्र में जमीन पर उतरे, उत्तर प्रदेश में अपना दल (एस) ऐसी पार्टी है जिसने अपने स्थापना कल से निरंतर समाज के दलित पिछड़ों के लिए संघर्ष किया चाहे जाति जनगणना, नीट परीक्षा में ओबीसी आरक्षण, केंद्र सरकार में पिछड़ों की नौकरियों का बैकलॉग पूरा करना, राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा, भारत सरकार में पिछड़ा वर्ग मंत्रालय का गठन, हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट में न्यायाधीशों के पद पर वंचित वर्गों की भागीदारी, राज्यों की प्रतियोगी परीक्षाओं में ओबीसी एस.सी. एस.टी. के ज्यादा कट ऑफ अंकों की विसंगतियां को दूर करने की बात हो इन सभी प्रमुख मुद्दों को पार्टी ने मजबूती से संसद में उठाया है। कुछ मामलों का समाधान अभी भी शेष है। उम्मीद है समय के साथ उन मसलों का भी समाधान होगा। उत्तर प्रदेश में एनडीए के सबसे सहयोगी दल के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन कर रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

राघव, त्रिवेदी. (2018). एक सार्थक जीवनः अपना कारवां. (पृ. 6). लखनऊ.

गुप्ता, रानी. (2023). उत्तर प्रदेश में क्षेत्रीय राजनीतिक दल के रूप में अपना दल (सोनेलाल) : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. पूर्वदेवा– सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका, 112, 52–60.

A K Verma. .(2005) Backward Caste Politics in Uttar Pradesh. *Economic and Political Weekly*, -3839 .3892

Sanjay Kumar Dwivedi. .(2011) Emerging Trends Politics in Uttar Pradesh. *The Indian Journal of Political Science*, .780-773

G., S. (1999). Rise of Smaller Parties . *Economic and Political Weekly*, 2912-2913.

Shrivastava, Ravi. (2016). Uttar Pradesh, Circa 2017. Economic and Political Weekly. 29-31.

Election Commission of India.